Toppersnotes
Unleash the topper in you

SSC - CGL

संयुक्त स्नातक स्तर

कर्मचारी चयन आयोग

भाग – 5

सामान्य अध्ययन

SIERRA INNOVATIONS

SSC - CGL

भारत का भूगोल

1.	भारत का विस्तार	1
2.	भारत के भौगोलिक भू–भाग	6
3.	भारत का अपवाह तंत्र	35
4.	जैव विविधता	50
6.	भारत की मृदा	54
7.	जलवायु	59
8.	भारत में खनिजों का वितरण	60
9.	भारत के प्रमुख उद्योग	69
10.	परिवहन	74
11.	कृषि	83
12.	भारत में निवास करने वाली जनजातियाँ	90
13.	विश्व भूगोल के कुछ महत्वपूर्ण तथ्य	91

भारत का इतिहास व राजव्यवस्था

1.	प्राचीन इतिहास	101
	• सिन्धु घाटी सभ्यता	103
	• वैदिक काल	107
	• बौद्ध धर्म	111
	• जैन धर्म	113
	• महाजनपद काल	114
	• मौर्य वंश	116
	• गुप्त वंश	119
2.	मध्यकालीन भारत	125
	• भारत पर अरब आक्रमण	125

	• सल्तनत काल	126
	• मुगल काल	132
	• भक्ति एवं सूफी आन्दोलन	138
	• मराठा उद्भव	139
3.	आधुनिक भारत का इतिहास	141
	• भारत में यूरोपियन शक्तियों का आगमन	141
	• मराठा शक्ति का उत्कर्ष	144
	• अंग्रेजो की भू–राजस्व पद्धतियाँ	146
	• गवर्नर व वायसराय	149
	• 1857 की क्रान्ति	155
	• प्रमुख आन्दोलन	156
	• कांग्रेस अधिवेशन	159
	• भारतीय क्रांतिकारी संगठन	170
4.	भारतीय संविधान	173
	• भारतीय संविधान के विकास का संक्षिप्त इतिहास	173
	• संविधान के भाग	177
	• अनुसूचियाँ	189
	• राष्ट्रपति की शक्तियां	193
	• लोकसभा	196
	• न्यायपालिका	201
	• राज्य	204
	• संविधान संशोधन	210
	• भारतीय राजव्यवस्था से संबंधित महत्पवपूर्ण तथ्य	212

विविध

1.	भारत के प्रमुख बांध	219
2.	भारत के पक्षी अभ्यारण	220
3.	भारत की जनसंख्या	221
4.	भारत के प्रमुख बंदरगाह	222
5.	भारत में प्रमुख नृत्य	223
6.	अंतर्राष्ट्रीय सीमा रेखाएं	224
7.	भारत के प्रमुख स्टेडियम	224
8.	प्रमुख व्यक्ति एवं उनके उपनाम	226
9.	भारत के प्रमुख स्थल एवं उनके निर्माणकर्ता	226
10.	भारत के राष्ट्रपति	228
11.	भारत के प्रधानमंत्री	228
12.	लोकसभा अध्यक्ष	229
13.	संघ लोक सेवा आयोग के वर्तमान एवं पूर्व चेयरमैन	230
14.	भारत के मुख्य निर्वाचन आयुक्त	230
15.	प्रमुख उच्च न्यायालय	231
16.	भारत के उच्चतम न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश	231
17.	नोबेल पुरस्कार प्राप्त भारतीय	233
18.	भारत में सर्वाधिक बडा, लम्बा एवं ऊँचा	234
19.	भारत में प्रथम पुरूष	235
20.	यूनेस्को द्वारा घोषित भारत के विश्व धरोहर स्थल	238
21.	भारत के राष्ट्रीय प्रतीक व चिन्ह	239
22.	अविष्कार–अविष्कारक	240
23.	अंतर्राष्ट्रीय संगठनों के महत्वपूर्ण तथ्य	242
24.	प्रसिद्ध पुस्तक व उनके लेखक	245
25.	खेलकूद	246
26.	विश्व की प्रमुख जल संधि	251
27.	प्रमुख पर्यावरण सम्मेलन	253

अर्थव्यवस्था

1.	अर्थव्यवस्था एवं इसके क्षेत्र	259
2.	राष्ट्रीय आय	261
3.	मुद्रास्फीति	262
4.	बैंकिंग	265
5.	वित्तिय समावेशन	269
6.	राजकोषीय नीति एवं बजट	272
7.	कर एवं जीएसटी	275
8.	व्यापार नीति एवं **FDI**	277
9.	विनिमय दर	279
10.	अन्तर्राष्ट्रीय संगठन	280
11.	वित्त आयोग, **PDS** एवं **MSP**	284
12.	सब्सिडी एवं ई–कॉमर्स	285
13.	बेरोजगारी एवं गरीबी	286
14.	आर्थिक विकास	288
15.	पंचवर्षीय योजनायें	289
16.	अन्य महत्वपूर्ण तथ्य	292

SSC CGL

SSC CGL में सामान्य जागरूकता अनुभाग का स्तर आसान से मध्यम है। परीक्षा के अनुसार सबसे महत्वपूर्ण विषय इतिहास, राजनीति, भूगोल, सामान्य विज्ञान और करेंट अफेयर्स हैं। यहाँ प्रत्येक विषय से पूछे गए प्रश्नों की औसत संख्या निम्न है:

SSC CGL Exam Analysis Tier I (General Awareness)		
Topic	**Difficulty Level**	**No of Question**
Polity	Easy-Moderate	**4 - 5**
Ancient History	Easy-Moderate	**5 - 6**
Medieval History	Easy-Moderate	
Modern History	Easy-Moderate	
Physics	Easy-Moderate	**7 - 8**
Chemistry	Easy-Moderate	
Biology	Moderate	
Computer & Technology	Moderate	
Economics	Easy-Moderate	**3 - 4**
World Geography	Easy-Moderate	**2**
Indian Geography	Easy-Moderate	
Current Affairs and Static Awareness	Moderate	**4**
Important Dates, Portfolios, Schemes	Moderate	
Sports, People in News, Books, Event	Moderate	
Total Questions	**Easy-Moderate**	**25**

भारतीय भूगोल (Indian Geography)
भारत का विस्तार

- भारत का अक्षांशीय विस्तार 8°4 से 37°6 उत्तरी अक्षांश तथा देशान्तरीय विस्तार 68°7 से 97°25 पूर्वी देशान्तर है परन्तु भारत में उत्तर से दक्षिण तक की दूरी, पूर्व से पश्चिम की दूरी से अधिक है क्योंकि ध्रुवीय क्षेत्रों की ओर बढने पर देशान्तर के बीच दूरी कम होती जाती है परन्तु अक्षांशों के बीच दूरी समान रहती है ।
- भारत का क्षेत्रफल = 3287263 किमी.^{2} = लगभग 32.8 लाख किमी.^{2}
- विश्व के कुल क्षेत्रफल का 2.4% भारत का क्षेत्रफल है ।
- क्षेत्रफल की दृष्टि से भारत का विश्व में 7th स्थान है ।
- क्षेत्रफल की दृष्टि से अधिकतम क्षेत्रफल वाले देश–
  - रूस
  - कनाडा
  - चीन
  - यू.एस.ए
  - ब्राजील
  - ऑस्ट्रेलिया
  - भारत
  - अर्जेन्टिना
  - कजाकिस्तान
  - अल्जीरिया

- भारत की जनसंख्या 2011 की जनगणना के अनुसार 121 करोड है जो विश्व की जनसंख्या का 17.5% है ।
- नवीनतम आंकाडो के अनुसार 2021 मे भारत की जनसंख्या लगभग 139 करोड हो चुकी है ।
- जनसंख्या के आधार पर विश्व में भारत का चीन के बाद दूसरा स्थान है ।
- भारत के उत्तर में हिमालय पर्वत, नेपाल, चीन तथा भूटान देश है तथा पश्चिम में अरब सागर, पाकिस्तान, अफगानिस्तान, पूर्व में बांग्लादेश, म्यांमार है और दक्षिण में श्रीलंका एवं हिन्द महासागर से घिरा है ।
- भारत में अण्डमान–निकोबार द्वीप समूह बंगाल की खाडी में स्थित है तथा लक्षद्वीप अरब सागर में स्थित है ।
- भारत का दक्षिणतम बिन्दु 6°45' उत्तरी अक्षांश है जिसे पिग्मेलियन प्वाइंट कहते है ।
- अरावली की पहाडियाँ राजस्थान में स्थित है । यह सबसे पुरानी चट्टानों से बनी है । इस पहाडी की सबसे ऊँची चोटी माउण्ट आबू पर स्थित गुरुशिखर है । इसकी ऊँचाई 1722 मी. है ।
- विन्ध्याचल का पठार झारखण्ड, उत्तर प्रदेश एवं छत्तीसगढ राज्यों में है । यह परतदार चट्टानों का बना है । विन्ध्याचल पर्वतमाला उत्तर भारत को दक्षिण भारत से अलग करती है ।
- मैकाले पठार छत्तीसगढ राज्य में स्थित है । मैकाले पहाडी का सर्वोच्च शिखर अमरकण्टक है । इसकी ऊँचाई 1036 मी. है । यह पुरानी चट्टानों का बना एक ब्लॉक पर्वत है ।
- सतपुडा की पहाडियाँ मध्य प्रदेश में है । ये ज्वालामुखी चट्टानों की बनी है । इनकी सबसे ऊँची चोटी धूपगढ (1350 मी.) है ।

- दक्कन का पठार महाराष्ट्र राज्य में है । यह ज्वालामुखी बेसाल्ट चट्टान का बना है । यह काली मिट्टी का क्षेत्र है । इसके पश्चिमी हिस्से में सह्याद्रि की पहाडी है । सह्याद्रि की सबसे ऊँची चोटी कल्सुबाई है ।
- धारवाड का पठार कर्नाटक राज्य में है । यह परिवर्तित चट्टानों का बना है । इस पठार के पश्चिमी भाग में बाबा बुदन की पहाडी तथा ब्रह्मगिरि की पहाडी है ।

अक्षांश का प्रभाव

- भारत का अक्षांशीय विस्तार 30° होने के कारण भारत में जलवायु, मृदा तथा वनस्पति से संबंधित विविधता पाई जाती है ।
- कर्क रेखा ($23\frac{1}{2}°N$)भारत को दो प्रमुख भागों में बाँटती है– भारत का दक्षिणी भाग ऊष्ण कटिबन्धीय क्षेत्र में तथा उत्तरी भाग शीतोष्ण कटिबन्धीय क्षेत्र में स्थित है ।
- भारत में उष्ण कटिबन्धीय मानसून जलवायु पाई जाती है क्योंकि उत्तर में स्थित हिमालय पर्वत साइबेरिया से जाने वाली ठण्डी पवनों को रोकता है ।
- कर्क रेखा भारत के निम्नलिखित 8 राज्यों से होकर गुजरती है ।

➢ गुजरात	➢ झारखण्ड
➢ राजस्थान	➢ पश्चिम बंगाल
➢ मध्यप्रदेश	➢ त्रिपुरा
➢ छत्तीसगढ	➢ मिजोरम

देशान्तर का प्रभाव

- भारत का देशान्तरीय विस्तार 30° होने के कारण भारत के सबसे पूर्वी तथा पश्चिमतम भाग के बीच 2 घंटे का अन्तर पाया जाता है ।
- 82½° पूर्वी देशान्तर को भारत की स्थानीय समय गणना के लिए एक मानक देशान्तर के रूप में चुना गया है । यह रेखा प्रयागराज के नैनी से होकर गुजरती है ।
- भारत का मानक समय **GMT** से 5½ घंटे आगे है ।
- 82½° पूर्वी देशान्तर निम्नलिखित राज्यों से होकर गुजरती है :–
  - ➢ उत्तर प्रदेश
  - ➢ मध्यप्रदेश
  - ➢ छत्तीसगढ
  - ➢ ओडिशा
  - ➢ आंध्र प्रदेश

देश के चार सीमा बिन्दु

- पूर्वी बिन्दु – किबिथु (अरूणाचल प्रदेश)
- पश्चिम बिन्दु – गौर मोता (गुजरात)
- उत्तरी बिन्दु – इन्दिरा कॉल (लद्दाख)
- दक्षिणी बिन्दु – इन्दिरा प्वाइन्ट (ग्रेट निकोबार द्वीप)

Border of India

1. स्थलीय सीमा

- भारत की स्थलीय सीमा लगभग 15200 किमी. (15106.7 किमी.) है ।
- भारत की स्थलीय सीमा निम्न देशों को स्पर्श करती है :-

		NCERT के अनुसार
1.	बांग्लादेश = **4096.7 km** (सर्वाधिक)	4096 किमी
2.	चीन = **3488 km**	3917 किमी
3.	पाकिस्तान = **3323 km**	3310 किमी
4.	नेपाल = **1751 km**	1752 किमी
5.	म्यांमार = **1643 km**	1458 किमी
6.	भूटान = **699 km**	587 किमी
7.	अफगानिस्तान = **106 km** (सबसे कम)	80 किमी यह सीमा अप्रत्यक्ष रूप से लगती है ।

देश तथा सीमा पर स्थित भारतीय राज्य			
क्र. सं.	देश	कुल संख्या	भारतीय राज्य
1.	चीन	5	जम्मू कश्मीर, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखण्ड, सिक्किम, अरुणाचल प्रदेश
2.	नेपाल	5	उत्तर प्रदेश, उत्तराखण्ड, बिहार, पश्चिम बंगाल, सिक्किम
3.	बांग्लादेश	5	पश्चिम बंगाल, असम, मेघालय, त्रिपुरा, मिजोरम
4.	म्यांमार	4	अरुणाचल प्रदेश, नागालैण्ड, मणिपुर, मिजोरम
5.	पाकिस्तान	4	गुजरात, राजस्थान, पंजाब, जम्मू कश्मीर
6	भूटान	4	सिक्किम, पश्चिम बंगाल, असम, अरुणाचल प्रदेश
7.	अफगानिस्तान	1	जम्मू कश्मीर **(POK)**

- भारत–पाकिस्तान की सीमा रेखा = रेडक्लिफ रेखा है जो 15 अगस्त 1947 को निर्धारित की थी
- भारत–चीन की सीमा रेखा = मैकमोहन जिसे 1914 ई. मे शिमला मे निर्धारित की गई ।
- भारत–अफगानिस्तान की सीमा रेखा = डूरन्ड रेखा

2. जलीय सीमा

- मुख्य भूमि की तटीय सीमा की लंबाई 6100 किमी. है ।
- भारत की कुल जलीय सीमा = 7516.6 किमी.
  Mainland = 5422.6 km & Island = 2094 km

हिमालय पर्वतीय प्रदेश का प्रादेशिक विभाजन

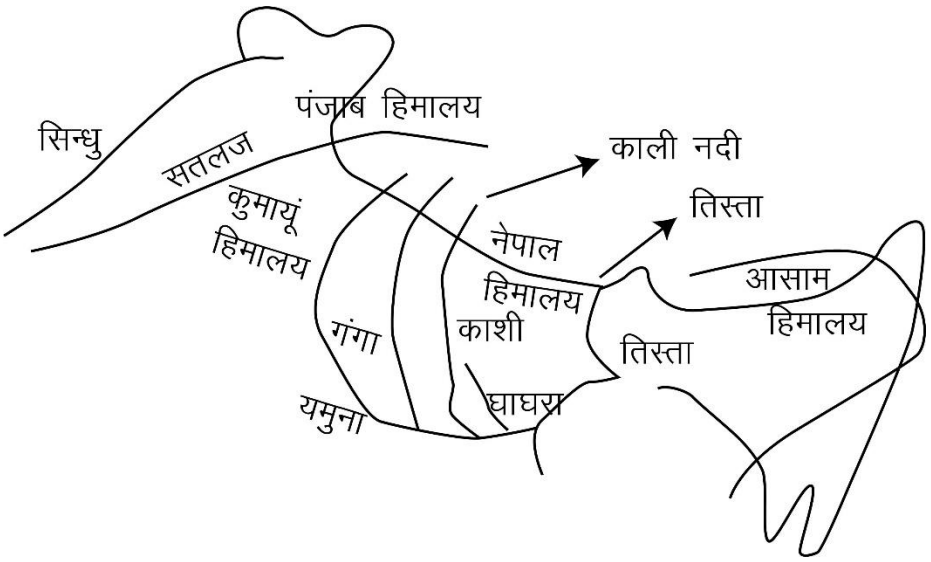

(a). कश्मीर/पंजाब हिमालय (Kashmir/Punjab Himalaya)

- हिमालय का यह भाग सिंधु तथा सतलज नदी के बीच स्थित है ।
- यह लगभग 560 किमी. की दूरी में विस्तृत है ।
- इस भाग में जास्कर, पीरपंजाल श्रेणी एवं जम्मू पहाडियाँ स्थित है ।
- इस भाग मे कांगडा, लाहुल तथा स्पीति की घाटियाँ है, जबकि राकक्षाताल और मानसरोवर झील भी है ।
- इस भाग में हिमालय की चौडाई सर्वाधिक पाई जाती है जो लगभग 250–400 किमी. के बीच पाई जाती है ।
- यहाँ हिमालय की ऊँचाई क्रमिक रूप से बढने लगती है ।

(b). कुमायूँ हिमालय (Kumao Himalaya)

- हिमालय का यह भाग सतलज से काली नदी के बीच स्थित है ।
- यह 320 किमी. की दूरी में विस्तृत है ।
- यह भाग मुख्य रूप से उत्तराखण्ड में स्थित है ।
- यहाँ कुछ प्रमुख चोटियाँ स्थित है । **e.g.-** नंदा देवी, केदारनाथ, बद्रीनाथ, कामेट, त्रिशुल ।
- नंदा देवी कुमायूँ हिमालय की सबसे ऊँची चोटी है (7558 मी.)

(c). नेपाल हिमालय (Nepal Himalaya)

- यह भाग काली तथा तिस्ता नदी के बीच स्थित है।
- यह भाग 800 किमी. की दूरी में विस्तृत है।
- इस भाग में हिमालय की ऊँचाई सर्वाधिक पाई जाती है ।
- यहाँ कई प्रमुख ऊँची चोटियाँ पाई जाती है । **e.g.-** माउण्ट एवरेस्ट, कंचनजंगा (8598 मी.)
- यहाँ हिमालय की चौडाई अत्यधिक कम हो जाती है।
- यहाँ की प्रमुख चोटियाँ कुला, कांगडा, चुमलहारी, काबरु, जांग नामचाबरवा है ।
- काठमांडू घाटी यहाँ की प्रमुख घाटी है ।

(d). असम हिमालय (Assam Himalaya):-

- यह भाग तिस्ता से दिहांग नदी के बीच स्थित है।
- यह 720 किमी. की दूरी में विस्तृत है।
- यहाँ हिमालय की चौडाई सबसे कम हो जाती है जो लगभग 150 किमी. हो जाती है।
- इस भाग में हिमालय की ऊँचाई क्रमिक रूप से कम होने लगती है।
- यहाँ की प्रमुख चाटियाँ कुला, कांगडा, चमलहारी, काबरु, जांग, नामचा बरखा है ।

हिमालय का महत्व

1. हिमालय पर्वत भारत को प्राकृतिक सीमा प्रदान करता है जिसके कारण भारत को एक उपमहाद्वीप की संज्ञा प्राप्त होती है ।
2. भारत की जलवायु पर भी हिमालय पर्वत का प्रभाव रहता है । हिमालय पर्वत साइबेरिया से आने वाली ठण्डी पवनों को रोकता है । यह मानसून पवनों को भारत में वर्षा करने के लिए बाध्य करते है
3. हिमालय पर्वतीय क्षेत्र में विभिन्न प्रकार की वनस्पति पाई जाती है । यहाँ बहुत अधिक जैव विविधता पाई जाती है ।
4. यहाँ बहुत से हिमनद स्थित है जिनसे भारत की प्रमुख नदियों का उदगम होता है ।
5. हिमालय का धार्मिक महत्व भी है । हिमालय पर्वतीय क्षेत्र में बहुत से तीर्थस्थल स्थित है ।
6. पर्यटन की दृष्टि से भी यह महत्वपूर्ण है क्योंकि यहाँ बहुत से पर्वतीय स्थल **(Hill Station)** स्थित है ।

	दर्रा	राज्य	विशेष
1.	काराकोरम दर्रा	जम्मू कश्मीर	यह भारत का सबसे ऊँचा दर्रा है ।
2.	जोजिला दर्रा	जम्मू कश्मीर	
3.	पीरपंजाल दर्रा	जम्मू कश्मीर	
4.	बनिहाल दर्रा	जम्मू कश्मीर	जवाहर सुरंग इसी दर्रे से गुजरती है ।
5.	बारालाचा दर्रा	जम्मू कश्मीर	मनाली–लेह को जोडता है ।
6.	बुर्जिल दर्रा	जम्मू कश्मीर	श्रीनगर को गिलगित से जोडता है ।
7.	खारदूंग दर्रा	जम्मू कश्मीर	इस दर्रे से भारत की सबसे ऊँची सडक गुजरती है ।
8.	शिपकीला दर्रा	हिमाचल प्रदेश	
9.	रोहतांग दर्रा	हिमाचल प्रदेश	
10.	बाडालाचा दर्रा	हिमाचल प्रदेश	
11.	माना दर्रा	उत्तराखण्ड	
12.	नीति दर्रा	उत्तराखण्ड	मानसरोवर व कैलाश पर्वत जाने का मार्ग
13.	लिपुलेख दर्रा	उत्तराखण्ड	
14.	नाथूला दर्रा	सिक्किम	
15.	जेलेप ला दर्रा	सिक्किम	

16.	डोंकिया दर्रा	सिक्किम	
17.	बोमडिला दर्रा	अरूणाचल प्रदेश	
18.	यांग्यपा दर्रा	अरूणाचल प्रदेश	
19.	दिफू दर्रा	अरूणाचल प्रदेश	
20.	पांग–लाड दर्रा	अरूणाचल प्रदेश	

उत्तरी मैदानी प्रदेश

- इस मैदानी प्रदेश का निर्माण नदियों द्वारा जमा किए गए अवसादों से होता है ।
- यह विश्व के सबसे विस्तृत जलोढ मैदानी प्रदेश है ।
- यह भारत का नवीनतम भौतिक प्रदेश है ।
- इस अत्यधिक उपजाऊ मैदान का उपयोग कृषि के लिए किया जाता है तथा यहाँ सर्वाधिक जनसंख्या घनत्व पाया जाता है ।

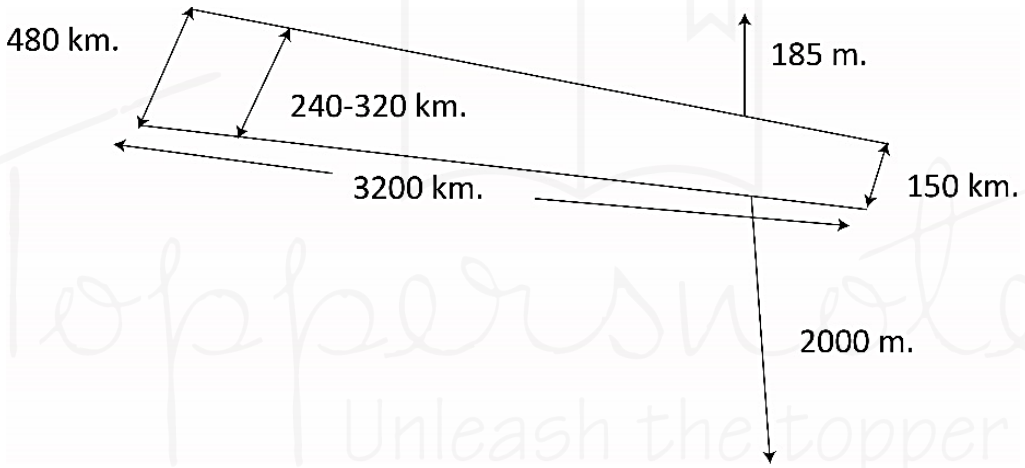

- यह प्रदेश 7 लाख वर्ग किमी. क्षेत्र में विस्तृत है ।
- इस मैदानी प्रदेश की चौडाई लगभग 240–320 किमी. पाई जाती है ।
- इन मैदानों में जलोढ अवसादों का जमाव 2000 मी. की गहराई तक पाया जाता है ।
- यह एक समतल मैदान है जिनका ढाल मन्द है ।

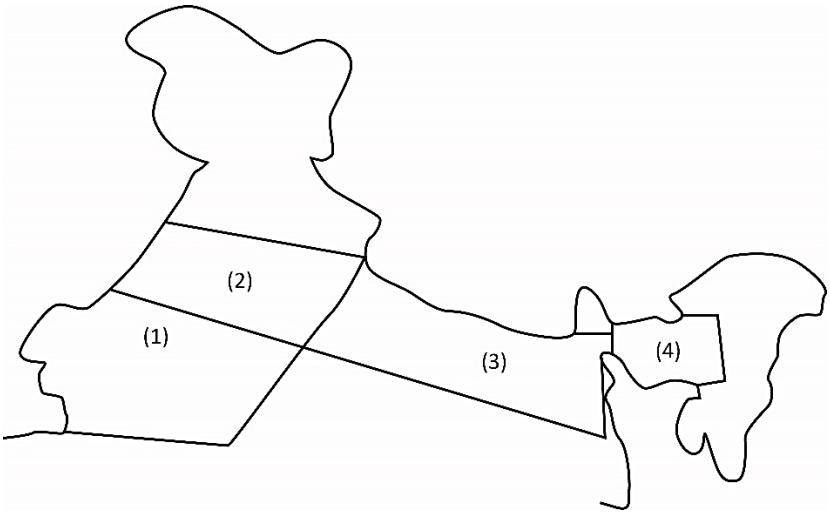

हिमालय अपवाह तंत्र

(Himalaya Drainage System)

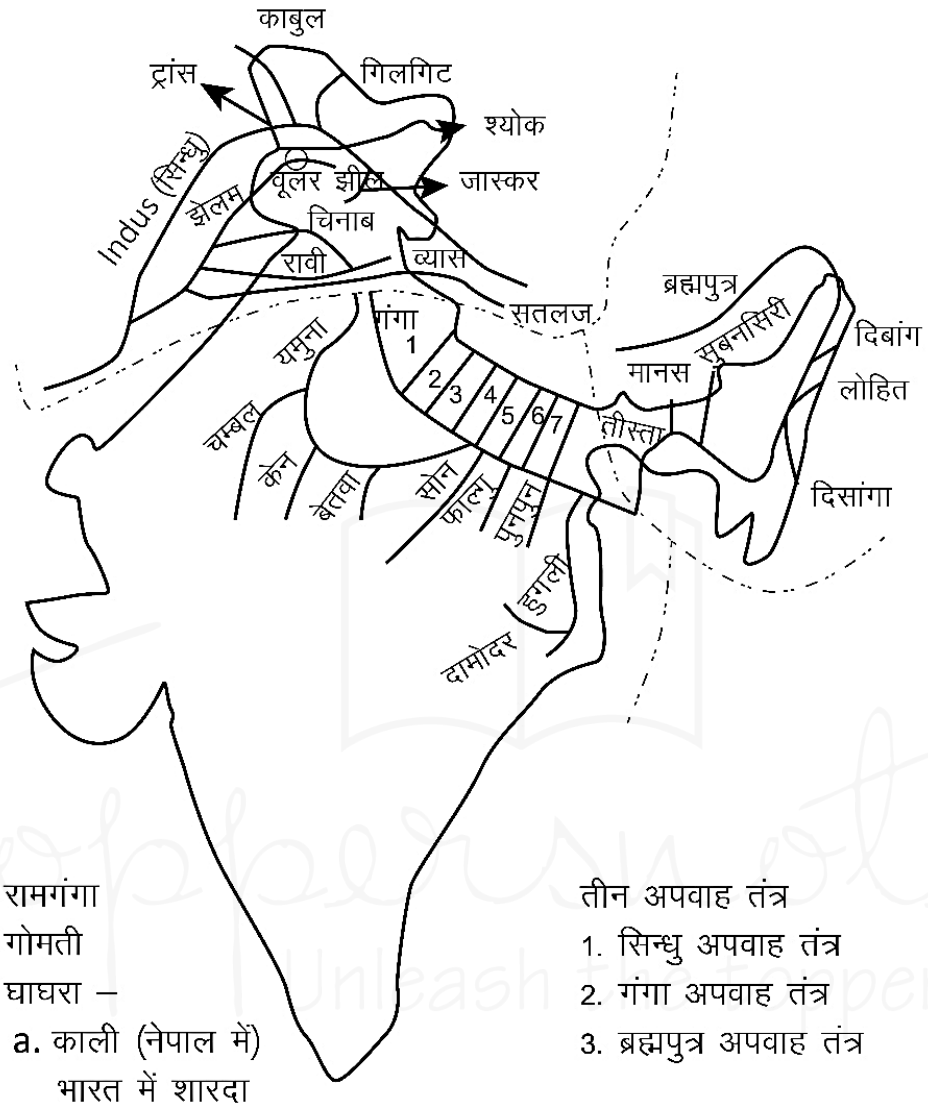

1. रामगंगा
2. गोमती
3. घाघरा –
   a. काली (नेपाल में) भारत में शारदा कहते है।
   b. सरयू
4. गण्डक
5. बुढ़ी गण्डक
6. कोसी
7. महानन्दा

तीन अपवाह तंत्र

1. सिन्धु अपवाह तंत्र
2. गंगा अपवाह तंत्र
3. ब्रह्मपुत्र अपवाह तंत्र

सुबनगिरी नदी पर भारत का सबसे बड़ा हाइड्रोपॉवर प्लांट लगाया जा रहा है।

- इस अपवाह तंत्र की नदियों का उद्गम या तो हिमालय पर्वतों से होता है, या फिर वे नदियाँ हिमालय से निकलने वाली नदियों से मिलती है । इस अपवाह तंत्र की नदियों को हिमनदों व वर्षा दोनों से जल की प्राप्ति होती है, इसलिए ये नदियाँ 'सदानीरा' होती है ।
- हिमालय अपवाह तंत्र को मुख्य नदियों के आधार पर तीन भागों में बाँटा जा सकता है –
  1. सिन्धु अपवाह तंत्र
  2. गंगा अपवाह तंत्र
  3. ब्रह्मपुत्र अपवाह तंत्र

वेद एवं उनसे संबंधित उनके ब्राह्मणक, आरण्यक एवं उपनिषद् ग्रंथ

वेद	भाग	विषय	पुरोहित	ब्राह्मणक	आरण्यक	उपनिषद
ऋग्वेद	साकल बालखिल्य वास्कल	छन्द/प्रार्थनाएं	होता/होतृ	ऐतरेय	ऐतरेय कौशीतकी	एतरेय कौशिल्की
यजुर्वेद	कृष्ण यजुर्वेद शुक्ल यजुर्वेद	उच्च स्वर में उच्चारित किये जाने वाले मंत्र	अध्वर्यु	शतपथ तैतरेय मायान	तैतरेय मैत्रायणी	कठ, तैतरेय वृहदायण्यक नारायणश्वर श्वेतस्वर, ईश, मुण्डक
सामवेद	कौथूम, राणण्यम और जैनिय	संगीत, गायन	उदगाता	पंचविश, षडविच जैमीनी	जैमीनी छन्दोग्य	केन जैमीनी छन्दोग्य
अथर्ववेद	शौनक,पीलाद	भौतिकवादी जादू, टोना लौकिक विधि विधान	ब्रहमा	गोपथ	–	प्रश्न, मुण्डक, मांडुक्य

- मुण्डकोपनिषद से सत्यमेव जयते लिया गया है ।
- प्रथम तीन वेदों को वेदत्रय कहा जाता है ।
- सबसे प्राचीन उपनिषद छान्दोग्य उपनिषद है ।
- उपनिषद को वेदांत कहते है ।

वेदांग

वेदों के सरलीकरण हेतु इनका निर्माण किया गया । यह वैदिक साहित्य का हिस्सा नही है । इसके छह भाग है

1. शिक्षा – इसे वेदों की नासिका कहा जाता है ।
2. ज्योतिष – इसे वेदों की आंख कहा जाता है ।
3. व्याकरण – इसे वेदों का मुख कहा जाता है ।
4. छनद – इसे वेदों का पैर कहा जाता है ।
5. निरूक्त – इसे वेदों का कान कहा जाता है ।
6. कल्प – इसे वेदों की हाथ कहा जाता है ।

कल्प के अंतर्गत शुल्व सूत्र ज्यामिति की सबसे प्राचीनग्रन्थ है ।

पुराण – संख्या – 18

ऋषि लोमहर्ष एवं इनके पुत्र उग्रश्रवा ने संकलित किया

- मत्स्य पुराण – सबसे प्राचीन एवं प्रामाणिक इसमें सातवाहन शासकों का उल्लेख, शुंगवंश का उल्लेख
- विष्णु पुराण – मौर्य वंश का उल्लेख
- वायु पुराण – गुप्त वंश का उल्लेख
- मार्कण्डेय पुराण – देवी महात्मय – (इसका भाग दुर्गासप्तशती) महामृत्युजंय मंत्र
- मत्स्य पुराण – सबसे प्राचीन एवं प्रामाणिक इसमें सातवाहन शासकों का उल्लेख, शुंगवंश का उल्लेख

स्मृति साहित्य

- सबसे प्राचीन उपनिषद छान्दोग्य उपनिषद है ।
- इसमें सामाजिक नियमों का उल्लेख किया गया है

आर्यो का निवास

- आर्यो के निवास के बारे में विभिन्न मत प्रचलित है
- बाल गंगाधर तिलक के अनुसार आर्यो का मूल निवास उत्तरी ध्रुव है ।
- दयानंद सरस्वती के अनुसार तिब्बत मूल के आर्य है
  डॉ. पैंनका ने जर्मनी को मूल स्थान बताया ।
  मेक्स मूलर के अनुसार आर्य मध्य एशिया (वैक्टीरियाई) है

आर्यो के उत्पति के संबंधित हाल ही में राखीगढ में उत्खनन से भी आर्यो की मूल उत्पति के संबंध मे पता नही लग पाया ।
सिंधु वासियों का राखीगढ से जो डीएनए मिला है । वह डीएनए उत्तर भारतीयों एवं दक्षिण भारतीयों में भी पाया गया है ।

ऋग्वैदिक काल के अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- ऋग्वेद में सबसे ज्यादा सिन्धु नदी का उल्लेख मिलता है ।
- सरस्वती सबसे पवित्र नदी थी । (देवीतमा, मातेतमा, नदीतमा)
- गंगा व सरयू का उल्लेख 1 – 1 बार
- यमुना का उल्लेख 3 बार
- "भुजवन्त" नामक पहाडी चोटी का उल्लेख – जो कि हिमालय है ।
- ऋग्वैदिक में वर्तमान की कई नदियों का उल्लेख मिलता है ।

सिंधु	सिंध
झेलम	वितस्तता
रावी	परूषणी
व्यास	विपासा
सतलज	शतद्रि
चेनाब	अष्किीनी
सरस्वती	सरस्वती
गोमल	गोमती
स्वात	सुवास्तु
कुर्रम	कुर्भ
काबुल	कुम्भा

नोट– गोमल, स्वात, कुर्रम, काबुल अफगानिस्तान की नदियां है ।
ऋग्वैदिक कालीन प्रशासन का मुखिया राजा होता था ।
राजा के सहयोग हेतु तीन संस्थाओं का उल्लेख मिलता है ।
यहां प्रशासन खंड स्तरीय होता है । जन सबसे बडी इकाई थी ।
ऋग्वेद में उल्लेख 275 बार । जिसका प्रमुख राजा होता था ।
विष का उल्लेख 70 बार ।
ग्राम का उल्लेख 13 बार ।

1. सभा – ऋग्वैदिक में आठ बार उल्लेख, कुलीन लोगों की संस्था थी ।
2. समिति – ऋग्वेद में नौ बार उल्लेख जनसामान्य की संस्था थी ।
3. विदथ – यह सबसे प्राचीन संस्था है । 122 बार उल्लेख मिलता है । कार्यशैली की जानकारी नही मिलती ।

- आर्यो का प्रिय पशु घोडा था ।
- वर्ण व्यवस्था कर्म आधारित थी ।
- तीन वार्णो का उल्लेख मिलता है ।
- महिलाओं को राजनीतिक अधिकार प्राप्त थे । घोषा, सिक्ता, अपाला, विषपला (योद्धा), नामक महिला विदुषियों को जिक्र मिलता है ।

ऋग्वैदिक काल में निम्न प्रमुख देवता थे ।

1. इंद्र – ऋग्वैदिक में 250 बार उल्लेख । इसे पुरंदर कहा गया है ।
2. वरूण – ऋग्वैदिक में 30 बार उल्लेख । ऋत का देवता है ।
3. अग्नि – ऋग्वैदिक मे 200 बार उल्लेख ।

आर्यो की अर्थव्यवस्था पशुपालन आधारित थी ।
युद्ध गायों के लिए होते थे ।

उत्तरवैदिक काल – 1000 – 600 ईसा पूर्व

- महत्वपूर्ण स्त्रोत – यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद, ब्राह्मण, उपनिषद् व आरण्यक
- आर्य संस्कृति के प्रसार और विकास, उत्कर्ष, विभिन्नीकरण का युग
- लौह प्रौद्योगिकी युग की शुरूआत । ("चित्रित धूसर मृदभाण्ड")

राजनैतिक जीवन – राजतंत्रात्मक शासन व्यवस्था

- राजा का पद वंशानुगत हो गया था ।
- ऐतरेय ब्राह्मण मे राजा की विभिन्न उपाधियों का वर्णन मिलता है ।
  स्वराट, विराट, एकराट, सम्राट
- राजा की सहायता हेतु 12 रत्निन् होते थे ।
- राजा यज्ञों का आयोजन करवाता था ।
  (i) अश्वमेध यज्ञ – यह साम्राज्यवादी यज्ञ होता था । 3 दिन तक होता
  (ii) राजसूय यज्ञ – राज्याभिषेक के समय किया जाता था इस दिन राजा हल चलाता था । अपने रत्निनों का निमंत्रण स्वीकार कर, उनके घर भोजन करने जाता था ।
  (iii) वाजपेयी यज्ञ – रथ दौड का आयोजन करवाते थे राजा हिस्सा लेता था व हमेशा जीतता था

- राजा के पास स्थायी सेना नहीं होती थी ।
- ऋग्वैदिक काल मे राजा को दिया जाने वाला स्वैच्छिक कर, अब अनिवार्य हो गया, जिसे 'बली' कहा जाता था ।(1/16वाँ भाग)
- विदथ का उल्लेख नहीं मिलता ।
- सभा, एवं समिति का प्रभाव कम हो गया था ।
- अथर्ववेद – सभा व समिति को प्रजापति की पुत्रियाँ कहा गया है ।
- राजा की "दैवीय उत्पति का सिद्धान्त" सर्वप्रथम ऐतरेय ब्राह्मण मे मिलता है ।

सल्तनत काल (1206 –1526)

मामूलक/गुलाम वंश

इस वंश के सभी प्रमुख शासक गुलाम (मामूलक) वंश के थे इसलिए इसे गुलाम वंश कहा गया

1. कुतुबद्दीन ऐबक (1206–1210)

- वास्तव में 1192 से 1210 ई. तक पहले गवर्नर था, बाद में शासक बना ।
- ऐबक का शाब्दिक अर्थ –''चन्द्रमा का स्वामी''
- 1208 ई. में गौरी के भतीजे ग्यासुद्दीन महमुद ने ऐबक को दास मुक्ति पत्र देकर उसे सुल्तान कि उपाधि प्रदान की थी ।

ऐबक की उपाधियाँ

- कुरान खाँ
- लाख बक्श (लाख)
- हातिम द्वितीय
- पील (हाथी) बक्श (बख्श)

ऐबक की राजधानी – लाहौर

- कुतुबुद्दीन ऐबक ने सुल्तान की उपाधि धारण नहीं की थी ।
- अपने नाम के सिक्के नहीं चलाये ।
- 1210 ई. में लाहौर में चौंगान (पोलो) खेलते समय घोडे से गिरकर मौत हो जाती है ।

2. इल्तुमिश (1211–1236 ई.)

- सुल्तान बनने से पहले बदायूं का गवर्नर था ।
- मुईज्जी एंव कुत्बी अमीरों का दमन करने के लिए'तुर्कान–ए–चिहलगानी'(40–चालीसा दल) का गठन किया ।
- इसे ''सल्तनत का वास्तविक संस्थापक'' कहा जाता है ।
- इल्तुतमीश ने दिल्ली को अपनी राजधानी बनवाया और अपने नाम के सिक्के चलाए ।
- राजधानी दिल्ली को बनाया ।
- तराईन का तीसरा युद्ध – 1216 ई. इल्तुतमिश बनाम यल्दौज (पराजित व मारा जाता है)
- 1221 ई. में जलालुद्दीन मंगबरनी का पीछा करते हुए चंगेज खान सल्तनत की तरफ आ रहा था इल्तुतमिश ने जलालुद्दीन मंगबरनी को सहायता न देकर नव स्थापित सल्तनत की रक्षा की ।
- इल्लतुतमीश ने कुंतुबमीनार के निर्माण कार्य को पुरा करवाया । उसे मकबरा शैली निर्माण का जन्मदाता भी कहा जाता है ।
- इसने दिल्ली में स्वयं का मकबरा भी बनवाया उसने बदायु में हौज–ए–खास का निर्माण करवाया ।
- 1229 ई. में खलीफा से मान्यता प्राप्त की ।
- नई मुद्रा जारी की थी ।
  1. चाँदी का टंका
  2. ताँबे का जितल
- 1236 ई. में मृत्यु
- 'इक्ता प्रणाली' को विकसित किया ।

3. रजिया सुल्ताना (1236–40 ई.)

- रजिया कुबा एवं कुलाह पहनकर दरबार में आती थी सिंहासन पर बैठती थी । प्रथम महिला शासक
- गैर तुर्क लोगों को महत्वपूर्ण पद प्रदान किए :–
  अल्तुनिया – तबर हिन्द का गवर्नर (भटिण्डा)
  याकूत – अमीर –ए–आखूर (अश्व शाला का प्रमुख)
  एतगीन – अमीर
- कैथल (हरियाण) नामक स्थान पर डाकुओं ने रजिया की हत्या कर दी ।
- रजीया कि असफलता का मुख्य कारण तुर्की गुलामों कि महत्वकांक्षाए थी ।

4. बलबन (1266–86)

- चालीसा दल का सदस्य था ।
- रजिया के समय बलबन अमीर–ए–आखूर (अश्वशाला) का प्रधान था ।
- राजत्व का दैवीय सिद्धान्त –
  1. जिल्ल– ए– इलाही (ईश्वर की छाया)
  2. नियामत– ए– खुदाई (ईश्वर का प्रतिनिधि)
- यह रक्त की शुद्धता में विश्वास रखता था ।
- इसका संबंध ईरान के अफरासियाब वंश से था
- इसने ईरानी रीति – रिवाज एवं प्रथाएँ आरम्भ की ।
  1. सिजदा
  2. पैबोस / पायबोस
  3. नोरोज / नवरोज त्यौहार
  4. तुलादान
  5. ताजिया
- इसने सैनिक विभाग की स्थापना की – 'दीवान ए अर्ज'
- गुप्तचर विभाग = दीवान ए बरीद

आधुनिक भारत का इतिहास

भारत में यूरोपियन शक्तियों का आगमन

सत्रहवीं शताब्दी के दौरान भारत विदेशी व्यापार का एक ऐसा आकर्षण केन्द्र बन गया था कि हर विदेशी राष्ट्र व्यापार के माध्यम से उस पर अपना आधिपत्य जमाना चाहता था। क्योंकि –
भारत में अग्रांकित यूरोपियन शक्तियाँ अपने हित साधने हेतु आयी –
पुर्तगाल – (1498)
डच – (1596)
अंग्रेज – (1600)
डेनिश – (1616)
फ्रांसीसी - (1664)
स्वीडिश – (1731)

1. पुर्तगाली

- प्रथम पुर्तगाली यात्री 'वास्को – डी – गामा' था जिसने भारत की खोज (1498) की।
- अब्दुल मनीक नामक गुजराती व्यक्ति उसका मार्गदर्शक था।
- वास्को – डी – गामा पश्चिमी तट के कालीकट बन्दरगाह पर आया था।
- कालीकट के जमोरिन (वहाँ का राजा) ने वास्को – डी – गामा का स्वागत किया।
- वास्को – डी – गामा को भारत के साथ व्यापार में 60 गुना फायदा हुआ था।
- 1502 में वास्को – डी – गामा दूसरी बार भारत आया।
- 1524 में वास्को – डी – गामा की भारत में ही मृत्यु हो गई।
- 1961 तक इनका गोआ, दमन व द्वीप पर अधिकार था।
- पेड्रो अल्वारेज केबाल : दूसरा पूर्तगाली यात्री (1500 ई. में)
- 1503 में पूर्तगालियों ने कोचीन में प्रथम फैक्ट्री की स्थापना की।
- पूर्तगालियों का प्रथम गर्वनर फ्रांसिस्को – डी – अल्मेडा भारत में 1505 में बनाया।
- अल्फांसो – डि – अल्बुकर्क : द्वितीय पुर्तगाली गर्वनर 1509 में भारत आया।
- यह पूर्तगालियों का भारत में वास्तविक संस्थापक था
- (1509 में) अल्बुकर्क ने कृष्णदेवराय (विजयनगर) के कहने पर बीजापुर के राजा युसुफ आदिल शाह से गोवा छीन लिया था
- 1530 में 'नीनो डि कुन्हा' ने कोचीन से अपनी राजधानी को गोवा में विस्थापित कर ली थी तथा 1961 तक गोवा पर पूर्तगालियों का शासन रहा।

नोट : 1542 में जेसुइट संत जेवियर (पादरी), अल्फांसो डी सूज़ा (गर्वनर) के साथ भारत आया था।
नीले समुद्र की नीति – पूर्तगालियों का समुद्र पर एकाधिकार था।

पूर्तगालियों का सामुद्रिक साम्राज्य एस्तादो द इण्डिया कहलाता था।

- पूर्तगालियों ने भारत में बडे जहाजों का निर्माण प्रारम्भ किया।
- 1556 में गोवा में पहली बार प्रिंटिंग प्रेस (छापाखाना) लगाया गया।
- मक्का और तम्बाकू की फसल बाद में पूर्तगालियों ने प्रारम्भ की।
- स्थापत्य कला की "गोथिक शैली" प्रारम्भ की। (ऊँची उठी हुई छते)

2. डच

कार्नेलियन डे हस्तमान : पहला डच यात्री 1596 में भारत आया।

- 1602 में डच ईस्ट इण्डिया कम्पनी की स्थापना हुई
- 1605 में 'मसूलीपट्टनम' (पूर्वी तट पर) में पहली फैक्ट्री की स्थापना की।
- 1653 में चिनसूरा (बंगाल) में फैक्ट्री शुरू की।
- इस फैक्ट्री को गुस्तावास फोर्ट कहा जाता था।
- 1759 में अंग्रेजो ने 'वेदरा के युद्ध' में डचों को हरा दिया था।
- डचो ने पुलीकट (जो उनका मुख्यालय) था में स्वर्ण सिक्के वेंगोडा का प्रचलन करवाया था।

3. डेनिश ईस्ट इण्डिया कम्पनी

- डेनमार्क की "ईस्ट इण्डिया कम्पनी" की स्थापना 1616 ई. में हुई।
- इस कम्पनी ने 1620 में त्रैंकोंवार (तमिलनाडु) तथा 1667 में सेरामपुर (बंगाल) में अपनी व्यापारिक कम्पनियाँ स्थापित किये।
- श्रीरामपुर डचों का प्रमुख केन्द्र था।
- 1854 में डचों ने अपनी वाणिज्यिक कम्पनी अंग्रेजों को बेच दी।

1857 की क्रांन्ति

- बैरकपुर में 34 वीं इनफेन्ट्री के सैनिक मंगल पाण्डे ने 29 मार्च को चर्बी वाले कारतुसों के खिलाफ विद्रोह कर दिया ।
- 8 अप्रैल को उसे फांसी दे दी गई ।
- 24 अप्रैल को मेरठ छावनी के 90 सैनिकों ने विद्रोह कर दिया ।
- 10 मई को मेरठ छावनी में क्रान्ति की शुरूआत होती है ।
- 20 NI (Native Infantary) तथा 3 L.C. (Light cavelary) ने विद्रोह किया था ।
- विद्रोही सैनिक दिल्ली चले गये तथा 11 मई को बहादुर शाह जफर को अपना नेता बनाया ।
- 25 अगस्त को बहादुरशाह के नाम से आजमगढ (सभी को क्रान्ति के लिए प्रेरित करने के लिए) घोषणा की गई ।

1857 का विद्रोह

भारतीय नायक (विद्रोह के)	समय (विद्रोह का)	केन्द्र	ब्रिटिश नायक (विद्रोह दबाने के)	समय (विद्रोह दबाने का)
बहादुरशाह जफर एवं जफर बख्त खां, कार्यकारी सेनापति (सैन्य नेतृत्व)	11, 12 मई, 1857	दिल्ली	थेकलसन हडसन	21 सितम्बर 1857
नाना साहब एवं तात्या टोपे	5 जून, 1857	कानपुर	कैंपबेल	6 सितम्बर 1857
बेगम हजरत महल	4 जून, 1857	लखनऊ	कैंपबेल	मार्च, 1858
रानी लक्ष्मी बाई एवं तात्या टोपे	जून, 1857	झांसी, ग्वालियर	ह्यूरोज	3 अप्रैल, 1858
लियाकत अली	1857	इलाहाबाद, बनारस	कर्नल नील	1858
कुँअर सिंह	अगस्त,1857	जगदीशपुर (बिहार)	विलियम टेलर, मेजर विसेंट आयर	1858
खान बहादुर खां	1857	बरेली	सर कौलिन कैंपबेल	1858
मौलवी अहमद उल्ला	1857	फैजाबाद		1858
अजीमुल्ला	1857	फतेहपुर	जनरल हैनर्ड	1858

बंगाल आर्मी में सर्वाधिक सैनिक अवध के होते थे इसलिए अवध को 'बंगाल आर्मी की नर्सरी' कहा जाता था ।

- रानी लक्ष्मीबाई ने ग्वालियर पर अधिकार कर लिया था ।
- सिंधिया ने अंग्रेजो का साथ दिया था तथा रानी लक्ष्मीबाई ग्वालियर में लडते हुये मारी गई ।
- ह्यूरोज ने रानी लक्ष्मीबाई के बारे में कहा कि – ''भारतीय क्रान्तिकारियों में एक मात्र मर्द है''
- कैनिन ने कहा था– ''सिंधिया अगर क्रान्ति में शामिल हो जाता तो हमें भारत से जाना पडता ।''

संविधान के भाग

भाग 1

संघ और उसका राज्यक्षेत्र **(Union and the territory)**

अनुच्छेद 1 : संघ का नाम और राज्यक्षेत्र
अनुच्छेद 2 : नए राज्यों का प्रवेश या स्थापना
अनुच्छेद 2 क : निरसित (Deleted)
अनुच्छेद 3 : नए राज्यों का निर्माण और वर्तमान राज्यों के क्षेत्रों, सीमाओं या नामों में परिवर्तन
अनुच्छेद 4 : पहली अनुसूची और चौथी अनुसूची के के संशोधन तथा अनुपूरक आनुषंगिक और पारिणामिक विषयों का उपबंध करने के लिए अनुच्छेद 2 और अनुच्छेद 3 के अधीन बनाई गई विधियाँ ।

भाग 2

नागरिकता **(Citizenship)**

अनुच्छेद 5 : संविधान के प्रारम्भ पर नागरिकता
अनुच्छेद 6 : पाकिस्तान से भारत को प्रवजन करने वाले कुछ व्यक्तियों के नागरिकता के अधिकार
अनुच्छेद 7 : पाकिस्तान को प्रवजन करने वाले कुछ व्यक्तियों के नागरिकता के अधिकार
अनुच्छेद 8 : भारत के बाहर रहने वाले भारतीय उद्भव के कुछ व्यक्तियों के नागरिकता के अधिकार
अनुच्छेद 9 : विदेशी राज्य की नागरिकता स्वेच्छा से अर्जित करने वाले व्यक्तियों का नागरिक न होना ।
अनुच्छेद 10 : नागरिकता के अधिकारों का बना रहना
अनुच्छेद 11 : संसद् द्वारा नागरिकता के अधिकार का विधि द्वारा विनियमन किया जाना

भाग 3

मूल अधिकार **(Fundamental Rights)**

साधारण (General)
अनुच्छेद 12 : परिभाषा
अनुच्छेद 13 : मूल अधिकारों के असंगत या उनका अल्पीकरण करने वाली विधियाँ

1. समता का अधिकार
(Right to Equality)

अनुच्छेद 14 : विधि के समक्ष समता
अनुच्छेद 15 : धर्म, मूलवंश, जाति, लिंग या जन्मस्थान के आधार पर विभेद का प्रतिषेध
अनुच्छेद 16 : लोक नियोजन के विषय में अवसर की समता
अनुच्छेद 17 : अस्पृश्यकता का अंत
अनुच्छेद 18 : उपाधियों का अंत

2. स्वातंत्रय – अधिकार
(Right to Freedom)

अनुच्छेद 19 : वाक्–स्वातंत्रय आदि विषयक कुछ अधिकारों का संरक्षण
अनुच्छेद 20 : अपराधों के लिए दोषसिद्धि के संबंध में संरक्षण
अनुच्छेद 21 : प्राण और दैहिक स्वतंत्रता का संरक्षण
अनुच्छेद 22 : कुछ दशाओं में गिरफ्तारी और निरोध से संरक्षण

3. शोषण के विरूद्ध अधिकार
(Right Against Exploitation)

अनुच्छेद 23 : मानव के दुर्व्यापार और बलात्श्रम का प्रतिषेध
अनुच्छेद 24 : कारखानों आदि में बालकों के नियोजन का प्रतिषेध

4. धर्म की स्वतंत्रता का अधिकार
(Right to Freedom of Religion)

अनुच्छेद 25 : अंतःकरण की और धर्म के अबाध रूप से मानने, आचरण और प्रचार करने की स्वतंत्रता
अनुच्छेद 26 : धार्मिक कार्यों के प्रबंध की स्वतंत्रता
अनुच्छेद 27 : किसी विशिष्ट धर्म की अभिवृद्धि के लिए करों के संदाय के बारे में स्वतंत्रता
अनुच्छेद 28 : कुछ शिक्षा संस्थाओं में धार्मिक शिक्षा या धार्मिक उपासना में उपस्थित होने के बारे में स्वतंत्रता

भाग 5 :- संघ (अनुच्छेद 52-151)

क्र.सं.	अनुच्छेद	विषय
1.	अनु. 52 - 151	-
2.	अनु. 52 - 78	कार्यपालिका
3.	अनु. 79 - 123	विधायिका
4.	अनु. 124 - 147	न्यायपालिका
5.	अनु. 148 - 151	CAG
6.	अनु. 52 - 78	कार्यपालिका >> राष्ट्रपति
7.	अनु. 52	भारत का राष्ट्रपति

भारत का एक राष्ट्रपति होगा ।

अनुच्छेद 53 संघ की कार्यपालिका शक्ति

- संघ की कार्यपालिका शक्तियां राष्ट्रपति में निहित होगी
- राष्ट्रपति कार्यपालिका का प्रमुख होगा । लेकिन अनुच्छेद 74 में यह प्रावधान है कि राष्ट्रपति मंत्रिपरिषद की सलाह से कार्य करेगा ।
- कार्यपालिका का वास्तविक प्रमुख प्रधानमंत्री होता है

अनुच्छेद 54 राष्ट्रपति का निर्वाचन

1. लोकसभा तथा राज्यसभा के निर्वाचित सदस्य
2. राज्यों की विधानसभाओं के निर्वाचित सदस्य
3. पांडुचेरी व दिल्ली विधानसभा के निर्वाचित सदस्य

नोट :- राष्ट्रपति के निर्वाचक मंडल में जो सदस्य भाग नहीं लेते :-

1. लोकसभा व राज्यसभा के मनोनीत सदस्य
2. राज्य की विधानसभा के मनोनीत सदस्य
3. राज्य विधान परिषद के सदस्य

अनुच्छेद 55 राष्ट्रपति के निर्वाचन की प्रक्रिया

- आनुपातिक प्रतिनिधित्व पद्धति के अनुसार एकल संक्रमणीय मत प्रणाली द्वारा ।
- एक विधायक के मत का मूल्य = राज्य की कुल जनसंख्या $\times \frac{1}{1000}$ / राज्य विधानसभा के निर्वाचित कुल सदस्य
- एक संसद के मतों का मूल्य = सभी राज्यों के विधायकों के मतों का कुल मूल्य

संसद के निर्वाचित सदस्यों की कुल सदस्य संख्या

- निश्चित मतों का भाग = $\frac{\text{Total Valid Vote}}{1+1=2} + 1$
- 1971 की जनसंख्या के आधार पर मत का मूल्य निकाला जायेगा ।
- राष्ट्रपति चुनाव से संबंधित सभी विवादों की जांच व फैसले उच्चतम न्यायालय में होते है तथा उसका फैसला अंतिम होता है ।
- राष्ट्रपति के चुनाव की अधिसूचना चुनाव आयोग द्वारा दी जाती है जबकि लोकसभा व राज्यसभा के चुनाव की अधिसूचना राष्ट्रपति द्वारा जारी की जाती है ।
- राष्ट्रपति चुनाव का सम्पादन लोकसभा का मुख्य सचिव करवाता है जबकि उपराष्ट्रपति के चुनाव का सम्पादन राज्यसभा का मुख्य सचिव करवाता है ।
- राष्ट्रपति के चुनाव हेतु 50 प्रस्तावक एवं 50 अनुमोदकों की आवश्यकता होती है ।

अनुच्छेद 56 राष्ट्रपति की पदावधि :- राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति को अपने हस्ताक्षर सहित लेख द्वारा अपना पद त्याग सकेगा । परन्तु

- संविधान का अतिक्रमण करने पर राष्ट्रपति को अनुच्छेद 61 में उपबंधित रीति से चलाए गए महाभियोग द्वारा पद से हटाया जा सकेगा ।
- राष्ट्रपति अपने पद की अवधि समाप्त हो जाने पर भी तब तक पद धारण करता रहेगा जब तक उसका उत्तराधिकारी अपना पद ग्रहण नहीं कर लेता है ।

अनुच्छेद 57 पुनर्निर्वाचन के लिए पात्रता :

अनुच्छेद 58 राष्ट्रपति निर्वाचित होने के लिए अर्हताएं :-

1. वह भारत का नागरिक हो ।
2. 35 वर्ष की आयु पूरी कर चुका हो ।
3. लोकसभा का सदस्य निर्वाचित होने की योग्यता रखता हो ।

अनुच्छेद 59 राष्ट्रपति के पद के लिए शर्ते

अनुच्छेद 60 राष्ट्रपति द्वारा शपथ या प्रतिज्ञान

अनुच्छेद 61 राष्ट्रपति पर महाभियोग चलाने की प्रक्रिया

- संविधान के अतिक्रमण की स्थिति में ही महाभियोग लाया जा सकता है ।
- महाभियोग के आरोप संसद के किसी भी सदन में प्रारम्भ किये जा सकते है । उन आरोपों पर सदन के 1/4 सदस्यों (जिस सदन ने आरोप लगाए गए है) के हस्ताक्षर होने चाहिए और राष्ट्रपति को 14 दिन का नोटिस देना चाहिए ।
- USA में यह प्रस्ताव (महाभियोग की प्रक्रिया) House of Representative में ही आरम्भ हो सकती है ।
- यह प्रस्ताव सदन के कुल सदस्यों के 2/3 बहुमत से पारित किया जाना चाहिए ।

संसद

अनुच्छेद 79 संसद का गठन :– लोकसभा, राज्यसभा तथा राष्ट्रपति संयुक्त रूप से संसद कहलाती है ।

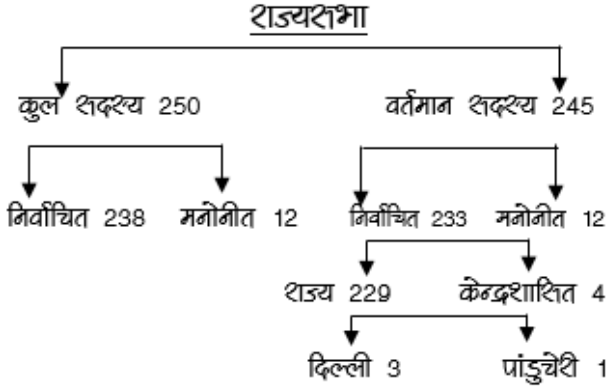

अनुच्छेद 80 राज्यसभा की संरचना :– पहले राज्यसभा को Council of States कहा जाता था लेकिन 1954 से इसका नाम राज्यसभा रखा गया ।

- राज्यसभा को उच्च सदन भी कहते हैं ।
- राज्यसभा को दूसरा सदन भी कहते हैं ।
- राज्यसभा को स्थायी सदन भी कहते हैं क्योंकि इसे भंग नहीं किया जा सकता ।
- राज्यसभा के 1/3 सदस्य हर 2 वर्ष बाद सेवानिवृत होते हैं ।
- राज्यसभा के सदस्यों का निर्वाचन अप्रत्यक्ष रूप से होता है ।
- राज्यसभा के सदस्यों का निर्वाचन राज्य विधानसभा के सदस्यों द्वारा आनुपातिक प्रतिनिधित्व पद्धति द्वारा एकल संक्रमणीय मत प्रणाली द्वारा होता है ।
- राज्यसभा के सदस्यों का कार्यकाल 6 वर्ष का होता है ।
- सबसे ज्यादा राज्यसभा सदस्य उत्तरप्रदेश (31 सदस्य) से आते हैं जबकि त्रिपुरा से 1 सदस्य आता है ।
- अनुसूची 4 में राज्यसभा सीटों का आवंटन दिया गया है ।
- राष्ट्रपति आंग्लो इंडियन के तहत 12 सदस्यों को मनोनीत करता है ।

राज्यसभा के विशेषाधिकार

- **अनुच्छेद 249 :–** राज्यसभा संसद को राज्यसूची के विषय पर कानून बनाने की अनुमति दे सकती है
- **अनुच्छेद 312 :–** राज्यसभा 2/3 बहुमत से प्रस्ताव पारित करके नयी अखिल भारतीय सेवाओं का सृजन कर सकती है ।

नोट :– वर्तमान में अखिल भारतीय सेवायें = IAS, IPS, IFS

- **अनुच्छेद 67 :–** उपराष्ट्रपति को हटाने की प्रक्रिया केवल राज्यसभा से ही आरम्भ की जा सकती है ।
- भारत का उपराष्ट्रपति राज्यसभा का पदेन सभापति होता है ।
- यह राज्यसभा की कार्यवाही के संचालन तथा सदन के अनुशासन बनाये रखने के लिए उत्तरदाई होता है ।
- सभापति राज्यसभा के नये सदस्यों को शपथ दिलाता है ।

- **अनुच्छेद 81 लोकसभा की संरचना :–**

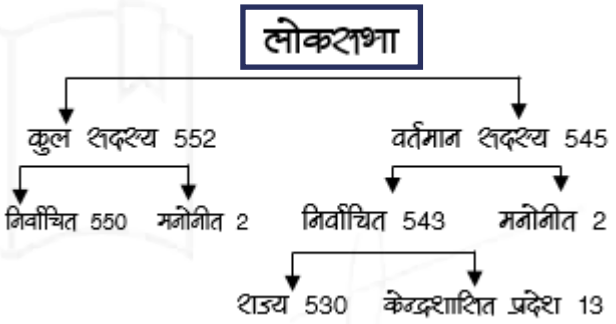

- लोकसभा को निम्न सदन भी कहते हैं ।
- लोकसभा को लोकप्रिय सदन भी कहते हैं ।
- लोकसभा को प्रथम सदन भी कहते हैं ।
- लोकसभा को अस्थायी सदन भी कहते हैं ।
- लोकसभा के सदस्यों का निर्वाचन प्रत्यक्ष होता है । लोकसभा का कार्यकाल 5 वर्ष का होता है ।
- आपातकाल में एक बार में 1 वर्ष के लिए कार्यकाल बढाया जा सकता है ।
- सभी राज्यों को जनसंख्या के आधार पर प्रतिनिधित्व दिया जाता है । एक राज्य के अन्दर से चुने जाने वाले प्रत्येक M.P. समान जनसंख्या का प्रतिनिधित्व करते हैं ।
- सबसे बडा लोकसभा संसदीय क्षेत्र लद्दाख है ।
- सर्वाधिक लोकसभा कि सीटें उत्तरप्रदेश में है ।
- 84 वां संविधान संशोधन (2001) में अगले 25 वर्षो तक (यानी वर्ष 2026 तक) लोकसभा सीटों की संख्या निश्चित कर दी गयी । इसके तहत परिसीमन आयोग का गठन किया गया जिसके द्वारा राज्यों के अन्दर लोकसभा सीटों को पुनः व्यवस्थित किया गया । SC/ST की सीटों को भी निश्चित किया गया ।
- राष्ट्रपति 2 सदस्यों को मनोनीत करता है ।

87 वां संविधान संशोधन, 2003 :-

- SC के लिए 84 सीटों को आरक्षित किया गया ।
- ST के लिए 47 सीटों को आरक्षित किया गया ।
- SC के लिए सबसे ज्यादा सदस्य उत्तरप्रदेश से आरक्षित हैं ।
- ST के लिए सबसे ज्यादा सदस्य मध्यप्रदेश से आरक्षित हैं ।

अनुच्छेद 84 संसद की सदस्यता के लिए अर्हता

1. वह भारत का नागरिक हो ।
2. राज्यसभा में स्थान के लिए कम से कम 30 वर्ष तथा लोकसभा में स्थान के लिए कम से कम 25 वर्ष की आयु पूरी कर चुका हो ।
3. संसद के द्वारा निश्चित की गयी अर्हताओं को पूरा करता हो ।
4. उसे निर्वाचन आयोग द्वारा प्राधिकृत किसी व्यक्ति के समक्ष तीसरी अनुसूची में दिए प्रारूप के अनुसार शपथ या प्रतिज्ञान लेना चाहिए ।

पद का रिक्त होना

- यदि कोई व्यक्ति लोकसभा व राज्यसभा दोनों सदनों का सदस्य चुन लिया जाता है और 10 दिन के भीतर एक सदन की सदस्यता नहीं त्यागता है तो उसकी स्वतः ही राज्यसभा की सदस्यता समाप्त हो जाती है
- यदि एक सदन के सदस्य किसी दूसरे सदन के लिए निर्वाचित होता है तो पहले वाले सदन की सदस्यता स्वतः ही समाप्त हो जाएगी ।
- यदि कोई सदस्य दो सीटों से एक साथ चुनाव जीतता है और वह एक सीट को 14 दिन के भीतर नहीं त्यागता है तो दोनों सीटों से उम्मीदवारी समाप्त हो जाती है ।
- यदि कोई व्यक्ति राज्यविधानमंडल व संसद के दोनों सदनों के लिए सदस्यता के लिए निर्वाचित होता है तथा 14 दिन के भीतर एक सदस्यता नहीं त्यागता है तो उसकी संसद की सदस्यता समाप्त हो जाएगी

प्रोटेम स्पीकर (Protem Speaker)

- लोकसभा चुनाव के बाद नव निर्वाचित बैठक में प्रोटेम स्पीकर की नियुक्ति राष्ट्रपति द्वारा की जाती है और उसे राष्ट्रपति ही लोकसभा के सदस्य के रूप में शपथ दिलाता है ।

अनुच्छेद 93 लोकसभा अध्यक्ष

- लोकसभा अध्यक्ष, उपाध्यक्ष के पद को आरम्भ 1919 के भारत सरकार अधिनियम के तहत किया गया था और 1921 में सर्वप्रथम लोकसभा अध्यक्ष, उपाध्यक्ष की नियुक्ति की गयी ।
- सर्वप्रथम लोकसभा अध्यक्ष बने – फ्रेडरिक व्हाइट
- सर्वप्रथम लोकसभा उपाध्यक्ष बने – सच्चिदानंद सिन्हा
- प्रथम भारतीय लोकसभा अध्यक्ष बने – विठ्ठल भाई पटेल (1925)
- लोकसभा अध्यक्ष का निर्वाचन लोकसभा सदस्यों द्वारा साधारण बहुमत (लोकसभा की कुल सदस्य संख्या के बहुमत) से किया जाता है ।
- स्वतंत्र भारत के प्रथम लोकसभाध्यक्ष जी. वी. मावलंकर थे ।

अनुच्छेद 94 लोकसभा के अध्यक्ष व उपाध्यक्ष का पद रिक्त होना, पद त्याग और पद से हटाया जाना

- लोकसभा अपने कुल सदस्य संख्या के 'बहुमत' से प्रस्ताव पारित करके हटा सकती है । इस संकल्प को प्रस्तावित करने के आशय की कम से कम 14 दिन पूर्व सूचना दी जानी चाहिए ।
- लोकसभा उपाध्यक्ष का निर्वाचन साधारण बहुमत से होता है । लोकसभा उपाध्यक्ष, लोकसभा अध्यक्ष की अनुपस्थिति में उसके कर्त्तव्यों का निर्वहन करता है । जिस दौरान उपाध्यक्ष उसके कर्त्तव्यों का निर्वहन करता है जो अधिकार अध्यक्ष को प्राप्त होते है, अध्यक्ष के रूप में कार्य करते समय उपाध्यक्ष को भी प्राप्त रहेंगे अध्यक्ष के आने के पश्चात वे सभी अधिकार पुनः प्राप्त हो जायेगें ।
- लोकसभा उपाध्यक्ष, लोकसभा अध्यक्ष का अधीनस्थ नहीं होता है बल्कि वह सदन के प्रति उत्तरदायी होता है ।

राज्यसभा का सभापति अनुच्छेद 89

- देश का उपराष्ट्रपति राज्यसभा का पदेन सभापति होता है । जब उपराष्ट्रपति, राष्ट्रपति के रूप में कार्य करता है तो वह राज्यसभा के सभापति के रूप में काम नहीं करता है । राज्यसभा के सभापति को तब ही पद से हटाया जा सकता है । जब उसे उपराष्ट्रपति पद से हटा दिया जाए ।

भारतीय राज्यव्यवस्था से सम्बन्धित महत्वपूर्ण तथ्य

- भारतीय संविधान सभा का गठन कैबिनेट मिशन प्रस्तावों के अनुसार किया गया ।
- इसके गठन के लिए जुलाई – अगस्त 1946 में चुनाव हुआ ।
- 3 जून 1947 के भारत संविधान की योजना की घोषणा के बाद इसका पुनगर्ठन हुआ तथा पुनर्गठित संविधान सभा की संख्या 299 थी ।
- संविधान सभा के वैधानिक सलाहकार (Constitutional Advisor) के पद पर बी.एन. राव को नियुक्त किया गया
- 29 अगस्त 1947 को संविधान सभा ने डॉ.बी.आर अम्बेडकर की अध्यक्षता में प्रारूप समिति (Drafting Committee) का गठन किया ।
- 15 नवम्बर 1948 को संविधान के प्रारूप पर प्रथम वाचन प्रारम्भ हुआ ।
- 26 नवम्बर 1949 को संविधान के प्रारूप पर अन्तिम वाचन हुआ और इसी दिन संविधान सभा द्वारा पारित कर दिया गया ।
- 26 नवम्बर 1946 को संविधान के उन अनुच्छेदों को प्रस्तावित कर दिया गया जो नागरिकता निर्वाचन तथा अंतरिम संसद से सम्बन्धित थे ।
- संविधान सभा का अंतिम दिन 24 जनवरी 1950 था और उसी दिन संविधान पर संविधान सभा के सदस्यों द्वारा हस्ताक्षर कर दिया गया ।
- संविधान के निर्माण में 2 वर्ष 11 माह और 18 दिन का समय लगा ।
- वर्तमान में संविधान में 444 अनुच्छेद और 12 अनुसूचियाँ हैं ।
- ''पंथनिरपेक्ष'', ''समाजवाद'' तथा ''अखण्डता'' शब्द संविधान की उद्देशिका में 42 वें संशोधन के द्वारा 1976 में जोडे गये ।
- भारती की उद्देशिका में प्रयुक्त ''गणतन्त्र'' शब्द का तात्पर्य यह है कि भारत का राज्याध्यक्ष वंशानुगत (hereditary) नहीं होगा ।
- उच्चतम न्यायालय के निर्णय के अनुसार – संविधान की उद्देशिका संविधान का एक भाग है और इसमें संशोधन किया जा सकता है (केशवानंद भारती बनाम केरल – 1973 ई.) ।
- प्रो. व्हीयर ने भारत के संविधान को अर्द्धसंघीय (Quasifederal) संविधान कहा है ।
- राज्य पुनगर्ठन अधिनियम 1956 द्वारा भाषाई आधारों पर राज्यों का पुनगर्ठन किया गया ।
- भारतीय संविधान में नागरिकता शब्द को परिभाषित नहीं किया गया है तथा इसके सम्बन्ध में अनुच्छेद 5 से 11 तक में प्रावधान किया गया है ।
- संविधान के अनुसार कुछ पद केवल भारतीय नागरिकों के लिए आरक्षित हैं, जैसे – राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति, उच्चतम एवं उच्च न्यायालयों के न्यायाधीश, महान्याय वादी राज्यपाल एवं महाधिवक्ता का पद ।
- संविधान के 44 वे संशोधन द्वारा सम्पति के मूलाधिकार को समाप्त करके इस अनुच्छेद 300 (क) के अन्तर्गत रखा गया है । अब यह केवल एक विधिक (Legal) अधिकार रह गया है ।
- अनु. 15,16,19,29 तथा 30 द्वारा प्रत्याभूत मूलाधिकार केवल नागरिकों को ही प्रदान किये गये हैं ।
  शेष सभी मूलाधिकार नागरिकों तथा अन्य व्यक्तियों को प्रदान की गयी हैं ।
- मूल कर्तव्यों को 42 वें संविधान संशोधन द्वारा 1976 में जोडा गया ।
- राष्ट्रपति अपने पद पर रहते हुये किसी भी कार्य के लिए न्यायालय में उत्तरदायी नहीं ठहराया जा सकता है ।
- भारत में केवल नीलम संजीवा रेड्डी ही निर्विरोध राष्ट्रपति चुने गये ।
- भारत के दो राष्ट्रपति डॉ. जाकिर हुसैन तथा फखरूद्दीन अली अहमद की अपने कार्यकाल के दौरान ही मृत्यु हुयी थी ।
- भारत के मुख्य न्यायधीश मोहम्मद हिदायतुल्लाह ने दो बार कार्यकारी राष्ट्रपति के पद का निर्वहन किया था ।
- भारत का उपराष्ट्रपति राज्यसभा का पदेन सभापति होता है तथा इसी पद के कारण उसका वेतन दिया जाता है ।
- संघ शासन की वास्तविक शक्ति केन्द्रीय मंत्रिमंडल में निहित होती है , जिसका प्रधान प्रधानमंत्री होता है।
- प्रधानमंत्री का यह कर्तव्य यह है कि संघ के शासन की जानकारी राष्ट्रपति को दे ।
- प्रधानमंत्री लोकसभा के बहुमत दल का नेता होता है ।
- केन्द्रीय मंत्रिपरिषद लोकसभा के प्रति सामुहिक रूप से उत्तरदायी होती है ।
- संसद के तीन अंग होते हैं – लोकसभा, राज्यसभा, और राष्ट्रपति ।
- सरकार के तीन अंग होते हैं – विधायिका, कार्यपालिकाा और न्यायपालिका ।

- राज्यसभा का गठन 3 अप्रैल 1952 को हुआ और इसकी पहली बैठक 13 मई 1952 को हुयी ।
- राज्यसभा के सदस्यों के पहले समूह की सेवा निवृति
  2 अप्रैल 1954 को हुयी ।
- लोकसभा के परिक्षेत्र का परिसीमन आयोग द्वारा किया
  जाता है ।
- प्रथम लोकसभा की पहली बैठक 13 मई 1952 को हुई और 4 अप्रैल 1957 को पहली लोकसभा राष्ट्रपति द्वारा विघटित कर दी गयी ।
- राज्यसभा तथा लोकसभा के संयुक्त अधिवेशन की अध्यक्षता लोकसभा अध्यक्ष करता है ।
- लोकसभा के प्रथम अध्यक्ष गणेश वासुदेव मावलंकर थे । पं. जवाहर लाल नेहरू ने इन्हें संसद का पिता या जनक कहा था ।
- संयुक्त संसदीय समिति में लोकसभा को दो तिहायी तथा राज्यसभा के एक तिहायी सदस्य होते है ।
- धन विधेयक केवल लोकसभा में पेश किया जा सकता है
- धन विधेयक के सम्बन्ध में राज्यसभा को केवल सिफारिशी अधिकार है ।
- राज्यपाल विधान मंडल के सत्रावसान काल में अध्यादेश जारी कर सकता है । यह अध्यादेश 6 माह तक प्रभावी रहता है ।
- राज्यों की मंत्रिपरिषद सामुहिक रूप से विधानसभा के प्रति उत्तरदायी होती है तथा प्रत्येक मंत्री व्यक्तिगत रूप से राज्यपाल के प्रति उत्तरदायी होता है ।
- राज्य विधानमंडल में राज्यपाल तथा विधानसभा और विधान परिषद शामिल होता है ।
- राज्य के विधानसभा के सदस्यों की अधिकतम संख्या 500 और न्यूनतम संख्या 60 होगी ।
- विधानसभा की गणपूर्ति संख्या कुल सदस्यों का 1/10 है परन्तु यह किसी भी दशा में 10 सदस्यय से कम नहीं होगी ।
- संविधान के अनुच्छेद 370 द्वारा जम्मू कश्मीर को विशेष राज्य का दर्जा दिया गया है ।
- जम्मू-कश्मीर राज्य विधानसभा में दो महिलाओं को राज्यपाल नामजद करते है ।
- राष्ट्रपति जम्मू-कश्मीर के सम्बन्ध में वित्तीय आपात की घोषणा नहीं कर सकते ।
- राज्य के नीति-निर्देशक तत्वों से सम्बन्धित संविधान के भाग 4 के प्रावधान जम्मू-कश्मीर राज्य के विषय में लागू नहीं होते है ।
- जम्मू - कश्मीर राज्य का अपना संविधान है, जो एक पृथक संविधान सभा द्वारा बनाया गया है और यह संविधान 26 नवम्बर 1957 को लागू कर दिया गया ।
- भारत में केवल दो संघ शासित राज्यों में विधान सभायें है - दिल्ली और पांडिचेरी ।
- भारत में उच्च न्यायालय की संख्या 21 है ।
- देश में छः ऐसे राज्य है जहाँ पर विधान परिषदों का गठन किया गया है -
  1. उत्तर प्रदेश
  2. बिहार
  3. महाराष्ट्र
  4. कर्नाटक
  5. जम्मू कश्मीर(अब नही)
  6. आन्ध्र प्रदेश ।
- 4 अप्रैल, 2007 को आन्ध्र प्रदेश में पुनः विधानपरिषद का गठन किया गया ।
- राष्ट्रपति प्रत्येक पाँचवे वर्ष वित्त आयोग का गठन करता है ।
- प्रथम वित्त आयोग का गठन 1951 में किया गया था ।
- भारतीय संविधान के प्रवर्तित होने के बाद पहली बार राष्ट्रपति शासन पंजाब में लागू किया गया ।
- संविधान सभा के 284 सदस्यों ने संविधान पर हस्ताक्षर किये ।
- जब भारत आजाद हुआ तो उस समय ब्रिटेन के प्रधानमंत्री क्लामेंट एटली थे ।
- जब भारत आजाद हुआ तो उसक समय कांग्रेस केअध्यक्ष डे.पी. कृपलानी थे ।
- 15 अगस्त, 1947 से 26 जनवरी 1950 के मध्य भारत - ब्रिटिश राष्ट्रकुल का एक अधिराज था ।
- भारतीय संविधान 22 भागों में विभाजित किया गया है।
- भारतीय संविधान के प्रस्तावना के अनुसार भारत की शासन की सर्वोच्च सत्ता भारतीय जनता में निहित है ।
- भारतीय संविधान द्वारा प्रदत्त मौलिक अधिकारों के स्थगन सम्बन्धी कार्यपालिका के अधिकारों को जर्मनी के संविधान से लिया गया है ।
- भारत संविधान संशोधन की प्रक्रिया दक्षिण अफ्रीका के संविधान से ली गयी है ।
- राज्य पुर्नगठन अधिनियम 1956 में पारित किया गया इसके अध्यक्ष फजल अली थे ।
- संविधान में प्रेस की स्वतंत्रता का अलग से प्रबन्ध नहीं किया गया है । यह अनुच्छेद 19 (1) A से अंर्तनिहित है ।
- डॉ. बी.आर. अम्बेडकर ने सवैधानिक उपचारों के अधिकार को संविधान का हृदय व आत्मा कहा है ।

- 42 वें संविधान संशोधन द्वारा संविधान में मूल कर्तव्यों को शामिल किया गया है । इन्हें संविधान के भाग IV ए और अनुच्छेद 51 ए में शामिल किया गया है ।
- राष्ट्रीय आपात की स्थिति में मौलिक अधिकारों का हनन हो जाता है ।
- संविधान में 10 मौलिक कर्तव्यों का वर्णन किया गया है । मूल कर्तव्य (अनु. 51 क) को 42 वें संविधान संशोधन 1976 में जोडा गया ।
- 86 वें संविधान संशोधन द्वारा एक मूल कर्तव्य और जोडा गया जिससे इसकी संख्या अब ग्यारह हो गई
- ''राज्य का नीति निर्देशक तत्व एक ऐसा चेक है जो बैंक की सुविधानुसार अदा किया जाएगा'' – के. टी. शाह
- संविधान में नीति निर्देशक तत्वों को शामिल करने का उद्देश्य सामाजिक लोकतंत्र की स्थापना करना था ।
- पहला सवैंधानिक संशोधन 1951 में बनाया गया ।
- 42 वें संविधान संशोधन को लघु संविधान कहा जाता है ।
- 42 वें संविधान अधिनियम स्वर्ण सिंह समिति की रिपोर्ट के आधार पर तैयार किया गया था ।
- 52 वें संविधान संशोधन विधेयक 1985 दल–बदल से सम्बन्धित था ।
- भारतीय संविधान में सर्वाधिक बार संशोधन प्रधानमंत्री इन्दिरा गांधी के कार्यकाल में हुये ।
- भारत का राष्ट्रपति राष्ट्र का प्रमुख है । शासन का प्रमुख मंत्रिपरिषद और प्रधानमंत्री होता है ।
- भारतीय संविधान के अनुसार केन्द्र की कार्यपालिका शक्ति राष्ट्रपति में निहित होता है ।
- राष्ट्रपति के वेतन एवं भत्ते आयकर मुक्त है ।
- राष्ट्रपति के पद के रिक्त होने से 6 माह के भीतर अगले राष्ट्रपति का चुनाव हो जाना चाहिए ।
- 1952 में राष्ट्रपति के निर्वाचन के समय विपक्षी दलों का उम्मीदवार श्री के.टी. शाह थे ।
- राष्ट्रपति पद पर सर्वाधिक समय तक रहने वाले डॉ. राजेन्द्र प्रसाद थे एवं सबसे कम समय तक रहने वाले डॉ. जाकिर हुसैन थे ।
- राष्ट्रपति पद पर सबसे कम उम्र का राष्ट्रपति बनने का सौभाग्य नीलम संजीव रेड्डी को प्राप्त हुआ तथा सबसे अधिक उम्र के.आर. वेंकट रमन राष्ट्रपति बने
- किस कार्यवाहक राष्ट्रपति ने त्यागपत्र देकर चुनाव लडा और विजयी हुआ – वी.वी. गिरी ।
- नीलम संजीव रेड्डी राष्ट्रपति बनने से पूर्व लोक सभा अध्यक्ष रह चुके थे ।
- भारत के राष्ट्रपति की संवैधानिक स्थिति ब्रिटेन की महारानी से मिलती जुलती है ।
- संविधान के अनुच्छेद 123 के अर्न्तगत राष्ट्रपति अध्यादेश जारी करता है ।
- राष्ट्रपति द्वारा जारी अध्यादेश संसद का सभा प्रारम्भ होने के 6 सप्ताह तक प्रभावी रहता है ।
- राष्ट्रपति द्वारा आपात काल की उद्घोषणा के 30 दिन के भीतर संसद की स्वीकृति आवश्यक होता है ।
- संसद के दोनों सदनों द्वारा अनुमोदन होने के 6 माह बाद तक आपात काल प्रभावी रहता है ।
- आपात काल के दौरन संसद लोकसभा का कार्यकाल एक वर्ष बढा सकती है ।
- 42 वें संविधान संशोधन द्वारा आपात काल की अवधि को 6 माह से बढा कर एक वर्ष कर दिया गया है
- हिन्दू आचार संहिता विधेयक को लेकर प्रधानमंत्री को डॉ. राजेन्द्र प्रसाद से विवाद हुआ था ।
- भारत के उपराष्ट्रपति की तुलना संयुक्त राज्य अमेरिका के उपराष्ट्रपति से की जा सकती है ।
- सर्वाधिक समय तक उपराष्ट्रपति रहने का गौरव डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन को है ।
- मन्त्री परिषद का कोई सदस्य बिना किसी सदन का सदस्य रहे 6 माह तक मन्त्री का पद धारण कर सकता है ।
- मन्त्री परिषद में तीन स्तर के मन्त्री होते हैं –
  1. केबिनेट, 2. राज्य, 3. उपमंत्री
- सामूहिक रूप से मन्त्री परिषद लोकसभा के प्रति उत्तरदायी होता है ।
- प्रधानमंत्री पद पर सबसे कम समय तक रहने वाले अटल बिहारी बाजपेयी थे (13 दिन) ।
- दो बार कार्यकारी प्रधानमंत्री के रूप में पद संभालने वाले व्यक्ति गुलजारी लाल नन्दा थे ।
- सबसे कम उम्र में भारत का प्रधानमंत्री राजीव गांधी बने और सबसे अधिक उम्र में मोरार जी देसाई ।
- भारत के पहले उप प्रधानमंत्री सरदार पटेल थे ।
- संघीय मंत्री परिषद से त्यागपत्र देने वाले पहले मंत्री श्यामा प्रसाद मुखर्जी थे ।
- सबसे कम अवधि (5 दिन) तक मंत्री रहने का कीर्तिमान एच.आर. खन्ना के नाम है । वह विधि विभाग के मंत्री थे ।
- भारत की सम्परीक्षा और लेखा प्रणालियों का प्रधान नियन्त्रक एवं महालेखा परीक्षक (Controller and Auditor General of India) होता है ।
- नियन्त्रक अपनी रिपोर्ट राष्ट्रपति को प्रस्तुत करता है ।
- लोक सभा संसद का निम्न सदनों (लोर हाउस) तथा राज्य सभा उच्च सदन (अपर हाउस) है ।
- वर्तमान में लोक सभा के सदस्यों की संख्या 545 तथा राज्य सभा के सदस्यों की संख्या 245 है ।

अर्थव्यवस्था के क्षेत्र से सम्बन्धित अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

उद्योग क्षेत्र :-

- भारत की राष्ट्रीय आय का लगभग 25% भाग उद्योग क्षेत्र से आता है ।
- भारत की जनसंख्या का लगभग 25% भाग रोजगार के लिए उद्योगों पर निर्भर है ।
- उद्योगों को निम्न श्रेणी में बांटा जाता है-

(1) कुटीर उद्योग
(2) ग्रामीण उद्योग
(3) सूक्ष्म उद्योग
(4) लघू उद्योग
(5) मध्यम उद्योग
(6) वृहत् उद्योग

सूक्ष्म, लघू व मध्यम उद्योगों को MSME के नाम से जाना जाता है ।

1. पहली औद्योगिक नीति :-

- यह नीति 1948 में जारी की गई ।
- यह नीति डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी द्वारा जारी की गई ।
- इस नीति में मिश्रित अर्थव्यवस्था को अपनाया गया ।

(1) A श्रेणी
(2) B श्रेणी
(3) C श्रेणी
(4) D श्रेणी

2. दूसरी औद्योगिक नीति :-

- यह नीति 1956 में जारी की गई ।
- यह नीति पी. सी. महालनोबिस मॉडल पर आधारित थी ।
- इस नीति द्वारा भी मिश्रित अर्थव्यवस्था को अपनाया गया ।

3. तीसरी औद्योगिक नीति :-

- इसे डॉ. मनमोहन सिंह द्वारा जारी किया गया ।
- सरकार द्वारा केवल तीन उद्योग सार्वजनिक क्षेत्र के लिए रखे गये ।
  (1) परमाणु ऊर्जा (2) परमाणु खनिज (3) रेलवे
- शेष सभी उद्योग निजी क्षेत्र के लिए खोल दिये गये केवल संवेदनशील उद्योगों के लिए लाइसेंस की अनिवार्यता रखी गयी । उदा.- सिगरेट, बीडी, तम्बाकू, एल्कोहल, विस्फोटक आदि
- MRTP अधिनियम को समाप्त करके भारतीय प्रतिस्पर्धा लागू की गई ।
- भारत में विदेशी निवेश की अनुमति दी गई ।
- भारत में LPG सुधारों को अपनाया गया ।
- विद्यमान सार्वजनिक उद्योगों में निजीकरण के लिए विनिवेश को अपनाया गया ।

विनिवेश

- सरकार द्वारा किसी सार्वजनिक कंपनी में अपनी हिस्सेदारी बेचना या अपने समता अंशो को बेचना विनिवेश कहलाता है ।
- सामान्यतः निजीकरण को बढावा देने के लिए विनिवेश किया जाता है ।
- विनिवेश से सरकारी सम्पत्तियों से कमी आती है ।
- विनिवेश के कारण सरकार को गैर पूंजीगत प्राप्ति होती है ।

कृषि क्षेत्र

- ऐतिहासिक रूप से भारत एक कृषि प्रधान देश रहा है ।
- आजादी के बाद उद्योग और सेवा क्षेत्र में अत्यधिक तेजी से विकास हुआ । जबकि तुलनात्मक रूप से कृषि में उतनी तीव्रता से विकास नहीं हो पाया ।
- वर्तमान में राष्ट्रीय आय का लगभग 16 से 17% कृषि क्षेत्र से आता है जबकि आज भी भारत की आधी से अधिक आबादी रोजगार के लिए कृषि पर आधारित है ।

भारत में कृषि क्षेत्र की समस्याएँ :-

1. कृषि भूमि का आकार लगातार कम हो रहा है :-
2. भू-अभिलेखों में अस्पष्टता पाई जाती है :-
3. सिंचाई की समस्या कृषि भूमि का मात्र 35-36% भाग ही सिंचित है :-
4. प्रमाणित बीज का अभाव :-
5. उर्वरक :-

6. आधुनिक मशीनों का अभाव :-
7. वैज्ञानिक अनुसंधान :-
8. खाद्य प्रसंस्करण :-
9. कृषि विपणन :-
10. कृषि बीमा :-
11. वैज्ञानिक/तकनीकी सलाह का अभाव
12. कृषि वित्त की समस्या

राष्ट्रीय आय

- किसी देश में होने वाली सभी आर्थिक गतिविधियों का योग राष्ट्रीय आय कहलाता है अर्थात अर्थव्यवस्था के सभी क्षेत्रों की आय का योग राष्ट्रीय आय कहलाता है ।
- भारत में राष्ट्रीय आय की गणना CSO द्वारा की जाती है ।
- राष्ट्रीय आय के लिए आकडों का संकलन NSSO & CSO द्वारा किया जाता है ।
- यह दोनों संस्थाएँ MOSPI के अन्तर्गत कार्य करती है ।
  (1) MOSPI = Ministry of Statistics & Program Implementation (सांख्यिकी एवं कार्यक्रम क्रियान्वयन मंत्रालय)
  NSSO = National Sample Survey
- NSSO ग्रामीण क्षेत्र, कृषि क्षेत्र और असंगठित क्षेत्र के आकडे एकत्रित करता है ।
- CSO संगठित क्षेत्र, उद्योग क्षेत्र, शहरी क्षेत्र आदि के आकडे एकत्रित करता है ।
- उपरोक्त के अतिरिक्त कर विभाग के आकडे जैसे- GST के आकडे भी लिये जाते है ।
- अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर राष्ट्रीय आय की गणना करने के लिए तीन विधियों का उपयोग किया जाता है-
  (1) आय विधि
  (2) व्यय विधि
  (3) उत्पादन विधि
- भारत में मिश्रित विधि का उपयोग किया जाता है ।
- कृषि और उद्योग क्षेत्र के लिए उत्पादन विधि का उपयोग किया जाता है ।
- सेवा क्षेत्र के लिए आय विधि का प्रयोग किया जाता है ।
- भारत व्यय विधि का उपयोग नहीं करता है ।
- राष्ट्रीय आय की गणना चार मूल्यों पर आधारित होती है ।

(1) कारक लागत

(2) बाजार मूल्य- वह मूल्य जिस पर अंतिम उपभोक्ता द्वारा वस्तुएँ खरीदी जाती है । इसे वर्तमान मूल्य भी कहा जाता है ।

(3) आधार मूल्य-
- राष्ट्रीय आय की तुलना के लिए किसी एक वर्ष को आधार वर्ष माना जाता है ।
- भारत में 2011-12 को आधार वर्ष घोषित किया गया है ।
- किसी वस्तु का आधार वर्ष का मूल्य आधार मूल्य कहलाता है ।

(4) स्थिर मूल्य-
- यदि बाजार मूल्य में से मुद्रास्फीति का प्रभाव हटा दिया जाये तो वह स्थिर मूल्य कहलाता है ।
- राष्ट्रीय आय की गणना के लिए निम्न अवधारणाएँ प्रचलित है- GDP, GNP, NDP, NNP

सकल घरेलू उत्पाद **(GDP)** :- एक वित्त में किसी देश के निवासियों द्वारा देश की आर्थिक सीमा में उत्पादित अंतिम वस्तु और सेवाओं का मौद्रिक मूल्य GDP कहलाता है ।

वित्त वर्ष :-
- 1 अप्रैल से लेकर 31 मार्च तक 12 महीने की अवधि वित्त वर्ष कहलाती है ।
- वित्त वर्ष को परिवर्तित करने की संभावना ढूंढने के लिए निम्न कमेटियों का गठन किया गया
  (1) बेल्बी आयोग
  (2) L. K. JHA समिति
  (3) दार्निश वाचा समिति
  (4) शंकर आचार्य समिति (हाल ही में निर्मित)

अंतिम वस्तु एवं सेवा-
- उत्पादन प्रक्रिया से बाहर आने वाली वस्तुएं दो प्रकार की होती है ।

(1) मध्यस्थ वस्तुएं– ऐसी वस्तुएं जो किसी अन्य वस्तु के उत्पादन के लिए कच्चे माल के रूप में काम में ली जाती है, मध्यस्थ वस्तुएं कहलाती है। अर्थात यह वस्तुएं अंतिम उपभोक्ता द्वारा उपभोग में नहीं ली जाती जैसे– कार का इंजन

(2) अंतिम वस्तुएं – ऐसी वस्तुएं जिनका उपभोग अंतिम उपभोक्ता द्वारा किया जाता है अर्थात इनमें उत्पादन की प्रक्रिया पूर्ण हो चुकी होती है और उत्पादन संभव नहीं होता है । जैसे– कार

- दोहरी गणना से बचने के लिए मध्यस्थ वस्तुओं को छोड दिया जाता है और केवल अंतिम वस्तुओं को लिया जाता है ।
- भारत की GDP गणना अंतर्राष्ट्रीय प्रचलन के अनुरूप बनाने के लिए इसे GVA (सकल मूल्य संवर्द्धन) आधारित बनाया गया ।
  (1) GVA_{fc} = Rent + Interest + Wages + Profit
  (2) GVA_{bp} = GVA_{fc}+ उत्पादन कर – उत्पादन Subsidy
  (3) GDP_{mp} = GVA_{bp}+ उत्पाद कर – उत्पाद Subsidy
- वह मूल्य जिस पर सरकार द्वारा अंतिम उपभोक्ता से कर वसूले जाते है, आधार मूल्य कहलाता है ।

शुद्ध घरेलू उत्पाद (NDP) :-

- सकल घरेलू उत्पाद (GDP) में से मूल्य ह्रास घटाकर इसकी गणना की जाती है।
- विभिन्न देशों में मूल्य ह्रास गणना अलग–अलग विधियों से की जाती है । इसलिए NDP का आधार प्रत्येक देश में समान नहीं होता ।
- इस कारण NDP का उपयोग घरेलू उद्देश्यों के लिए किया जाता है ।

  NDP_{mp} = GDP_{mp} – Dep. (मूल्य ह्रास)

मूल्य ह्रास :– उत्पादन प्रक्रिया के दौरान, उत्पादन में प्रयोग में ली गई सम्पत्तियों व मशीनों में घिसावट होती है, इस कारण इनके मूल्य में आयी कमी मूल्य ह्रास कहलाती है ।

सकल राष्ट्रीय उत्पाद (GNP) :- एक वित्त वर्ष के दौरान देश के सभी नागरिकों द्वारा उत्पादित अंतिम वस्तुओं व सेवाओं का मौद्रिक मूल्य GNP कहलाता है ।

(1) GNP_{mp} = GDP_{mp} + Net factor Income from abroad (NFIFA)
(2) NFIFA = Income of Indian Citizen outside India – Income earned by foreigner in India

शुद्ध राष्ट्रीय उत्पाद (NNP) :-

- इसकी गणना के लिए GNP में से मूल्य ह्रास को घटाया जाता है ।
- भारत में कारक लागत पर NNP को राष्ट्रीय आय माना जाता है ।
- बाजार मूल्य/वर्तमान मूल्य पर राष्ट्रीय आय को शुद्ध राष्ट्रीय आय (NNI) कहा जाता है ।
- NNP_{mp} = GNP_{mp} – Dep.(मूल्य ह्रास)
- NNP_{fc} = NNP_{mp} – अप्रत्यक्ष कर + सब्सिडी
- प्रति व्यक्ति आय = $\frac{\text{राष्ट्रीय आय}}{\text{जनसंख्या}}$ $\frac{NNP_{fc}}{\text{जनसंख्या}}$
- GDP_{cp} = GDP_{mp} – मुद्रास्फीति (CP = -स्थिर मूल्य)
- GDP_{cp} को वास्तविक GDP भी कहा जाता है ।
- बाजार मूल्य पर GDP को Nominal GDP भी कहा जाता है ।
- GDP Deflator = $\frac{\text{Nomial GDP}}{\text{Real GDP}} / \frac{\text{GDPmp}}{\text{GDPcp}}$